

**घृतधारा स्त्री.** (तत्.) घी की धारा 2. पश्चिम देश की एक नदी 3. पुराणानुसार कुश दीप की एक नदी।

**घृतप्रमेह पुं.** (तत्.) प्रमेह रोग का एक प्रकार जिसमें मूत्र घी के समान गाढ़ा और चिकना होता है।

**घृतांत पुं.** (तत्.) घृतयुक्त अन्न 2. प्रज्वलित अग्नि।

**घृताक्त पुं.** (तत्.) घी से तर, घी से चुपड़ा हुआ।

**घृताचि पुं.** (तत्.) प्रज्वलित अग्नि।

**घृताची स्त्री.** (तत्.) स्वर्ग की एक आप्सरा 2. वह करछुली जिससे यज्ञों में घी अग्नि में डाला जाता है, श्रुवा 3. गायत्री देवी स्वरूपा देवी। कुशनाभ-नामक एक प्राचीन राजा की रानी का नाम।

**घृताहवन पुं.** (तत्.) अग्नि।

**घृताहुति स्त्री.** (तत्.) हवन के समय अग्नि में घी डालने की क्रिया।

**घृतेली स्त्री.** (तत्.) एक प्रकार का कीड़ा, घी का कीड़ा, तेल चट्टा।

**घृतोदंक पुं.** (तत्.) घी रखने का कुप्पा।

**घृतोद पुं.** (तत्.) पुराणों में वर्णित सात महासागरों में से एक, घृत समुद्र।

**घृष्ट पुं.** (तत्.) घिसा हुआ।

**घृष्टि स्त्री.** (तत्.) घर्षण, रगड़ा 2. विष्णुक्रांता, अपराजिता 3. होड़, स्पर्धा पुं (तत्.) शूकर, सूअर।

**घंटा पुं.** (देश.) सूअर का बच्चा।

**घंटी स्त्री.** (देश.) चने की फली के अंदर बीज रूप से चना होता है 2. एक पक्षी 3. चने की फल के आकार की कोई वस्तु।

**घेघा पुं.** (देश.) 1. गले की नली जिससे भोजन या पानी पेट में जाता है 2. गले का एक रोग जिसमें गले में सूजन आ जाती है।

**घेर पुं.** (देश.) चारों ओर का फैलाव, घेरा, परिधि, घेरने की क्रिया।

**घेरना स.क्रि.** (तद्.) 1. बाँधना, रोकना, चारों ओर से बाँधना 2. किसी स्थान को अपने अधिकार में रखना 3. सेना का शत्रु के किसी नगर या दुर्ग के चारों ओर आक्रमण के लिए स्थित होना 4. खुशामद करना, विनती करना।

**घेरदार वि.** (देश.+फा. दार) बड़े घेरे वाला, बड़े घेरे का, चौड़ा।

**घेरा पुं.** (देश.) 1. चारों ओर की सीमा 2. किसी तल के सब ओर के बाहरी किनारे 3. लंबाई चौड़ाई आदि का विस्तार 4. घिरा हुआ, फैला हुआ 5. किसी लंबे और घन पदार्थ की चौड़ाई और मोटाई का विस्तार, पेटा।

**घेराघार स्त्री.** (देश.+तत्.) चारों ओर से घेरने या छा जाने की क्रिया 2. चारों ओर का फैलाव, विस्तार 3. किसी कार्य के लिए किसी के घर बार-बार उपस्थित होने का कार्य, खुशामद, विनती।

**घेराबंदी स्त्री.** (देश.+फा. बंदी) किसी के चारों ओर घेरा डालने की स्थिति या भाव

**घेराव पुं.** (देश.) दे. घिराव।

**घेरेदार वि.** (देश.) चारों ओर से घिरा हुआ, घेरदार।

**घेवर पुं.** (देश.) एक प्रकार की मिठाई जो पतले घुले हुए मैदे, घी और चीनी से बनाई जाती है और बड़ी टिकिया या खजले के आकार की और सूराखदार होती है।

**घेवरना स.क्रि.** (तद्.) लगाना, पोताना, लेप लगाना।

**घैया पुं.** (देश.) गाय के थन से निकली हुई धार जो मुँह लगाकर पी जाए स्त्री. ओर, तरफ, दिशा।

**घैर पुं.** (देश.) बदनामी, अपयश

**घैल पुं.** (तद्.) घड़ा, कलसा, गगरा

**घोंगा पुं.** (देश.) दे. घोंघा।

**घोंघ पुं.** (तत्.) बीच का अंतर या अवकाश।

**घोंघा पुं.** (देश.) शंख की तरह का एक कीड़ा जो प्रायः नदियों, तालाबों तथा अन्य जलाशयों में पाया जाता है टि. इसकी बनावट घुमावदार होती है, पर इसका मुँह गोल होता है, जो खुल भी सकता है और बंद भी हो सकता है, इसके ऊपर का अस्थिकोश शंख से बहुत पतला होता है 2. गेहूँ की बाल में वह कोथली जिसमें दाना रहता है, जिसमें कुछ सार न हो, सारहीन 3. मूर्ख, जड़।

**घोंचवा पुं.** (देश.) एक प्रकार का बैल, घोंघा।